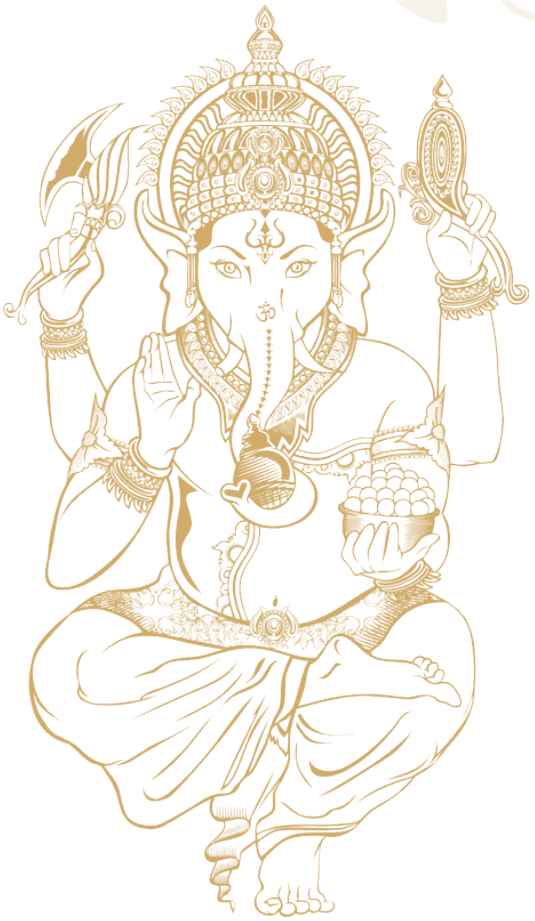

Mr. Aahan Kumar Gupta

01 Dec 2017

05:30 PM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120018001**

तिथि 01/12/2017 **समय** 17:30:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:06:14
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	22:23:41 घं
वेलान्तर	00:10:59 घं
सूर्योदय	06:18:54 घं
सूर्यास्त	16:56:13 घं
चैत्रादि संवत	2074
शक संवत	1939
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	13
नक्षत्र	भरणी
योग	परिघ
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ली-लीलाधर
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	गुरु
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

शुक्र 17वर्ष 2मा 21दि

शुक्र

01/12/2017
22/02/2035

शुक्र	23/06/2018
सूर्य	24/06/2019
चन्द्र	21/02/2021
मंगल	24/04/2022
राहु	23/04/2025
गुरु	23/12/2027
शनि	22/02/2031
बुध	23/12/2033
केतु	22/02/2035

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 3मा 20दि

उल्का

23/03/2022
23/03/2028

उल्का	23/03/2023
सिद्धा	23/05/2024
संकटा	22/09/2025
मंगला	21/11/2025
पिंगला	23/03/2026
धान्या	22/09/2026
भ्रामरी	23/05/2027
भद्रिका	23/03/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:46:40	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	राहु	---	0:00			
सूर्य			15:22:48	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	मित्र राशि	1.23	अमात्य	पितृ	वध
चंद्र			15:10:58	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.22	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			00:56:50	तुला	चित्रा	3	मंगल	बुध	सम राशि	1.15	कलत्र	भ्रातृ	क्षेम
बुध			04:56:02	धनु	मूल	2	केतु	मंगल	सम राशि	0.93	पुत्र	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			17:04:01	तुला	स्वाति	4	राहु	शुक्र	शत्रु राशि	1.16	आत्मा	धन	प्रत्यारि
शुक्र			06:02:28	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	बुध	सम राशि	1.24	मातृ	कलत्र	वध
शनि			03:42:54	धनु	मूल	2	केतु	चंद्र	सम राशि	1.27	ज्ञाति	आयु	अतिमित्र
राहु	व		23:29:40	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	मंगल	शत्रु राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		23:29:40	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	मंगल	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

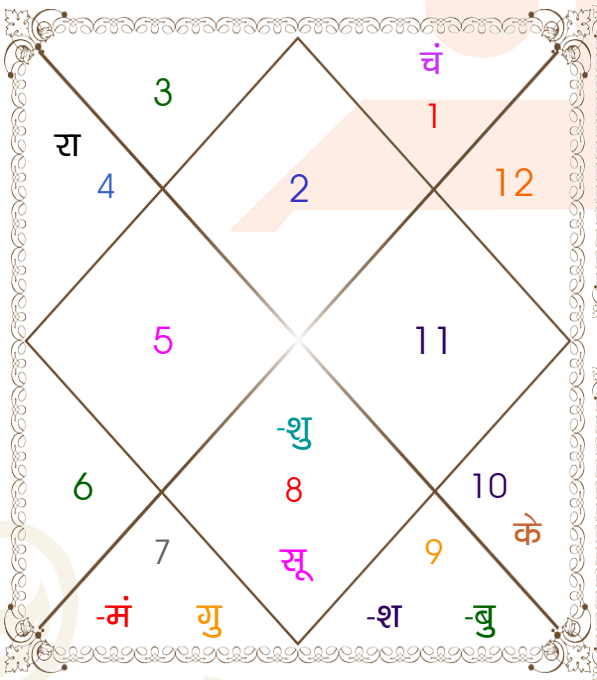

चन्द्र कुंडली

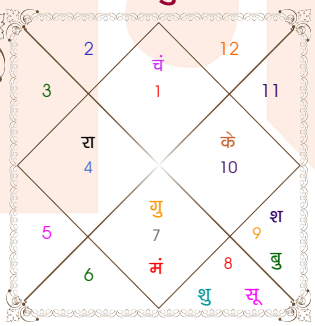

नवमांश कुंडली

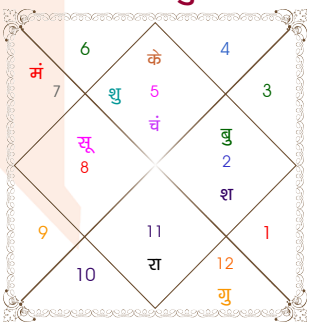

सर्वाष्टकवर्ग

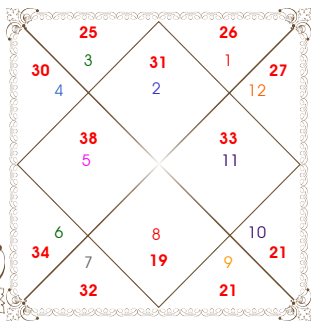

दशमांश कुंडली

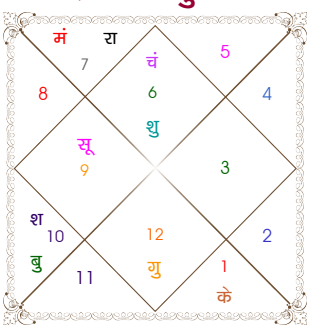

नक्षत्रफल

आपका जन्म भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल हैं। आपका गण मनुष्य, योनि गज, नाडी मध्य, वर्ण क्षत्रिय, तथा वर्ग मृग हैं। भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आपका जन्म नाम लि या "ली" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा- लीलाधर।

भरणी नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण आपका लोकोपवाद से अपयश का योग बनता है। मनोरंजन या खेलों के प्रति आप विशेष रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा इन्हीं पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। जल से आप नैसर्गिक रूप से भयभीत रहेंगे फलस्वरूप सर्दियों में स्नान करने तक की इच्छा का आप में अभाव रहेगा। आपकी प्रकृति चंचल होगी तथा अन्य लोगों से आपका व्यवहार सामान्य रहेगा।

सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरूश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।
जातकाभरणम्

अर्थात भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरू, चंचल प्रवृति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने निश्चय के पक्के होंगे तथा जो भी बात एक बार मस्तिष्क पर आ जायेगी उसे पूरा करके ही छोड़ेंगे सत्य का आप हमेशा अनुपालन करेंगे तथा सत्य वाणी बोलेंगे। शरीर आपका स्वस्थ रहेगा तथा रोगों का अभाव रहेगा। कार्य आप जो भी प्रारम्भ करेंगे चतुराई से उसे पूर्ण करेंगे। अतः आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

कृत निश्चयः सत्यारूग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आपका स्वभाव बङा जिददी बन जाएगा। जिस बात की हठ करेंगे उसे पूरा करके ही छोड़ेगे। इस प्रकार की प्रवृति से आपको परेशानी होगी। सम्पत्ति या धन दौलत का आपके पास अभाव नहीं रहेगा एवं धनार्जन पर्याप्त मात्रा में होगा तथा छोटी मोटी बीमारियों से दूर ही रहेंगे। आपकी मुखाकृति भी सुन्दर होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।
जातक दीपिका

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

कभी कभी आप मानसिक तथा शारीरिक रूप से व्याकुलता का भी अनुभव करेंगे। अपने प्रभाव में वृद्धि करने के लिए यदा कदा आप कठोरता का प्रर्दशन भी करेंगे।

लेकिन धन आपके पास पर्याप्त मात्रा में रहेगा तथा आप धनवान कहलाएंगे।

याम्यर्क्षे विकलोऽन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

मेष राशि में उत्पन्न होने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाले होंगे तथा अपने अन्य भाई-बहनों में श्रेष्ठ होंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा तथा आखें गोल होंगी। आपके सिर पर किसी घाव या चोट का निशान भी हो सकता हैं।

सिर पर बाल भी कम ही होंगे तथा हाथ एवं पैरों पर कमल के समान विशिष्ट कान्ति होगी। जल से आप स्वभाव से ही भयभीत रहेंगे। जीवन में आने वाली प्रत्येक कठिन समस्या का आप साहसपूर्ण मुकाबला करेंगे। संघर्ष करने की शक्ति आप के पास जन्मजात होगी। समाज में आपका उचित मान सम्मान होगा। बुद्धि आपकी चंचल होगी तथा आप धन को सम्मान से भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे। जिससे यदा कदा समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपको सहयोगियों तथा मित्रों का अभाव नहीं रहेगा। ये लोग बड़ी संख्या में आपके साथ रहेंगे। पुत्रों की संख्या भी कन्याओं से अधिक रहेगी। स्त्री जाति से आप हारे हुए रहेंगे अर्थात् स्त्रीजाति

आपकी प्रमुख कमजोरी होगी। लेकिन सभी लोगों से समानरूप से स्नेह युक्त व्यवहार करेंगे। अपनी इसी प्रवृति, सद्व्यवहार एवं विनयशीलता के कारण आपको समाज से पूर्ण मान, सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आपको क्रोध शीघ्र आएगा परन्तु आप शीघ्र प्रसन्न भी हो जाएंगे। यह प्रवृति आपकी स्वभाव से ही होगी। आप भ्रमण प्रिय होंगे और ऐसे स्थानों पर जाने की कामना करते हैं जो अगम्य हैं। अर्थात् जहाँ आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता है। आपकी हथेली में शौर्यसूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकते हैं। आप स्त्रियों के अत्याधिक प्रिय तथा आदरणीय होंगे। अन्य लोगों की सेवा करना तथा उनको सहयोग प्रदान करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे चाहे आप स्वयं विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष कर रहे हों।

वृतातामदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक महत्व प्रदान करना आपके बुजुर्गों तथा श्रेष्ठ संबंधियों की असन्तुष्टि का कारण बनेगा। परिणामस्वरूप या तो वे आपसे अलग होंगे या आप उनसे अलग होंगे। आपके सारे कार्य अपनी पत्नी के निर्देशानुसार ही सम्पन्न होंगे। अतः यह भी एक अलग या नाराज़ होने का कारण बनेगा। धन तथा पुत्र से आप सदैव युक्त रहेंगे। वैभव का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा समाज में पूर्ण मान सम्मान प्राप्त होगा।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप अगम्य स्थानों का चुनाव करेंगे। सामाजिक संबंधों की विस्तृता के कारण आप यदा कदा मांस, मदिरा इत्यादि का भी भक्षण कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

उग्रता का समावेश आपके स्वभाव में विद्यमान रहेगा। इससे क्रोध के रूप में प्रयोग करने से आपके लिए कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। चंचलता आपकी प्रवृति में

विराजमान रहेगी अतः समयानुसार आप मिथ्या भाषण भी करेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रूचि रहेगी तथा सिर में बालों की अल्प संख्या गंजेपन का अहसास करायेगी। गर्मी प्रदान करने वाले पदार्थो का अल्प मात्रा में भक्षण करें अन्यथा मस्तिष्क विकार का योग बनता हैं। दुर्घटनाओं की उपेक्षा करने के लिए भी प्रयत्नशील रहना चाहिए।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा देवताओं एवं ब्राहमणों की सेवा करेंगे। इनमें आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी। आपकी स्वाभाविक प्रवृतियाँ अभिमान से युक्त होंगी। धन की आपके पास कमी नहीं होगी तथा दयालुता आपके अर्न्तमन में विद्यमान रहेगी। दीन दुःखियों के प्रति आप दया का भाव प्रदर्शित करेंगे। शारीरिक बल आपका पूर्ण होगा। आप एक से अधिक कार्यों में भी निपुण हो सकते हैं। ज्ञानार्जन में भी आपकी गहन रूचि रहेगी। आपका शरीर कान्तियुक्त रहेगा साथ ही आपके द्वारा बहुत से लोगों को सुख की प्राप्ति होगी तथा काफी लोगों के आप आश्रयदाता भी होंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

मान सम्मान से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा आजीवन विपुल धन के स्वामी बने रहेंगे। आखें आपकी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी में चतुर होंगे। शरीर का वर्ण आपका गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने वाले होंगे। अथवा आप नगर के अधिकारी हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी,

दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गजयोनि में जन्म लेने के कारण आप राजा के प्रिय होंगे अर्थात् उच्च अधिकारियों तथा मंत्रियों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध होंगे तथा वे सब आपका सम्मान करेंगे। आप आत्मबल, बाहुबल तथा बुद्धिबल सबसे सुशोभित रहेंगे। अपने सारे कार्य आप अपने ही बल पर सुसम्पन्न करेंगे। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप उपभोग करने वाले होंगे। आप किसी उच्चाधिकारी या मंत्री के सहयोगी तथा खुद भी उच्चाधिकारी हो सकते हैं। आपका उत्साह हमेशा बना रहेगा तथा उत्साही प्रकृति होने से आप कठिन से कठिन कार्यों को सरलता पूर्वक सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं

सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, रविवार प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा ये सब अशुभ फल कारक हैं। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, साझेदारी या लेन देन इत्यादि कार्य न करें। सफलता प्राप्ति की आशा बहुत कम होगी लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। एतदतिरिक्त रविवार, मघा नक्षत्र, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि स्थित चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वर्जित रखें। उपरोक्त समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न हो यथा मानसिक तथा शारीरिक कष्ट हो रहा हो, व्यापार में हानि का योग बन रहा हो तथा नौकरी, पदोन्नति प्राप्ति में असफलता ही मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव श्री हनुमान जी का विधिपूर्वक पूजन करना चाहिए तथा सोना,गुङ गेंहू, घी, रक्त वस्त्र इत्यादि पदार्थो का शुभ मुहुर्त में दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप करवाने चाहिए। जिस से अशुभ फलों में कमी होगी एवं मानसिक परेशानी खत्म होगी तथा लाभ मार्ग प्रशस्त होगा। इसके अतिरिक्त मंगलवार के व्रत भी रखने चाहिए।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।